द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः |

स सौष्ठवौदार्य विशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे ||३||

अन्वय- द्विषां विघाताय विधातुम इच्छत: भूभृतः अनुज्ञाम् अधिगम्य स: रहसि सौष्ठवौदार्य विशेषशालिनीं विनिश्चितार्थाम् इति वाचम् आददे।

अर्थ – शत्रुओं के विनाश के लिए उद्योग करने के इच्छुक राजा (युधिष्ठिर) का आदेश पाकर उसने एकांत में शब्दों के सौष्ठव तथा अर्थ की गंभीरता से विशेष रूप से विभूषित एवं स्पष्ट अर्थों वाला इस प्रकार का वचन बोल्न आरंभ किया।

शब्दार्थ-

द्विषां = शत्रुओं के

विघाताय = विनाश के लिए वि+√हन्+घञ्

विधातुम = करने के लिए वि+√धा+तुमुन्

इच्छत: = इच्छा करने वाले वाले का √इष्+शतृ

भूभृतः = राजा का षष्ठी, एकवचन

अनुज्ञाम् = आज्ञा को द्वितीया, एकवचन

अधिगम्य = प्राप्त करके अधि+√गम्+क्त्वा

स: = वह प्रथमा, एकवचन

रहसि = एकांत में सप्तमी, एकवचन

सौष्ठवौदार्य = शब्द के सौष्ठव और अर्थ के वैभव से द्वितीया, एकवचन

विशेषशालिनीं = विशेष रूप से समन्वित, द्वितीया, एकवचन

विनिश्चितार्थाम् = निश्चित या स्पष्ट अर्थों वाली द्वितीया, एकवचन

इति = इस प्रकार

वाचम् = वाणी या वचन को द्वितीया, एकवचन

आददे = ग्रहण किया या बोलना प्रारम्भ किया

आ+√दा, लिट्लकार प्रथम पुरुष, एकवचन

व्याख्या – इस श्लोक के माध्यम से कवि कथा को आगे बढ़ाता है। यहाँ पर कवि ने वाणी के तीन गुणों का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं-

1. वाणी में सुंदर उपयुक्त शब्दों का प्रयोग होना चाहिए (सौष्ठवविशेषशालिनीं)।
2. अर्थ की स्पष्टता होनी चाहिए (औदार्यविशेषशालिनीं) ।
3. सप्रमाण होनी चाहिए (विनिश्चितार्थाम्)।

पद्य के उत्तरार्ध में 'व' की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार की सृष्टि हो रही है। कवि ने यहाँ वक्ता की वाक्पटुता और वचन के गांभीर्य की ओर इंगित लिया है। भर्तृहरि ने भी वाक्पटुता के महत्त्व की ओर संकेत देते हुए नीतिशतक में कहा है- "सदसि वाक्पटुता।"